International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 179-181

वैश्विक स्तर पर हिंदी की संभावनाएं औरं चुनौतियां

डॉ. पूरण प्रकाश जाटव*

प्रस्तावना

हिंदी आज सिर्फ साहित्य की भाषा नहीं बल्कि बाजार की भाषा है । उपभोक्तावादी संस्कृति ने विज्ञापनों को जन्म दिया जिससे न केवल हिंदी का अनुप्रयोग बढ़ा बल्कि युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी मिले।

आज का समय भूमंडलीकरण का है जिसका असली चेहरा बाजार के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है। तेजी से फैलती बाजार संस्कृति ने हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, खान–पान पहनावा, भाषा, संस्कृति आदि को प्रभावित किया है । बच्चों के सपने में बाजार का प्रवेश हो चुका है। मनुष्य की अस्मिता सुरक्षित रखने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। आज विश्व में लगभग 60000 भाषाएं किसी न किसी रूप में बोली और समझी जाती हैं लेकिन आने वाले समय में 90 प्रतिशत से अधिक का अस्तित्व खतरे में है। भाषाओं के इस विलुप्तीकरण के दौर में हिंदी अपने को न केवल बचाने में सफल हो रही है बल्कि इसका उपयोग अनुप्रयोग नियंत्रण बढ़ता जा रहा है।

यह भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्ष पुरानी है और इसमें डेढ़ लाख शब्दावली समाहित है। संप्रति हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त है क्योंकि यह अनेक विदेशी भाषाओं को न केवल स्वीकार करती है बल्कि विश्व की समस्त भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता रखती है। हिंदी के विकास के लिए विश्व की पैतीस सौ विदेशी कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया जा चुका है यह संख्या भी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। विश्व हिंदी का केंद्र सचिवालय मॉरीशस में बनना और हिंदी को प्रौद्योगिकी से जोड़ने के लिए किए जाने वाले सशक्त प्रयास इसे संयुक्त राष्ट्र की भाषाओं में स्थान दिलाने का प्रयास है बाजार के कारण भी हिंदी का प्रचार प्रसार व्यापक हो रहा है।

आज के वैश्विक फलक पर हिंदी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राज्य भाषा के साथ–साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। देखा जाए तो विश्व में चीनी भाषा (मंदारिन) के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है। इस क्रम में अंग्रेजी आज तीसरे पायदान पर है । विश्व के लगभग पॉच सौ केंद्र में हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है जहां न जाने कितने विद्वान अपना योगदान दे रहे हैं कंप्यूटर, मोबाइल और आई–पैड पर हिंदी की पहुंच नें यह बात सिद्ध कर दी है कि आने वाले समय में इंटरनेट की भाषा अंग्रेजी न होकर हिंदी होगी । अगर हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर बात करें तो जापान में हिंदी की पढ़ाई हिंदुस्तानी के रूप में सन 1908 से प्रारंभ हुई जिससे ज्यादातर व्यापार करने वाले लोग पढ़ाया करते थे पर बाद में इसका पठन–पाठन विशेष विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा किया जाने लगा जापान में हिंदी का पठन–पाठन

* सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, स्वर्गीय राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बॉदीकुई, दौसा, राजस्थान।

फिल्मी गीतों के माध्यम से किया जा रहा है। आज वह सात एफएम रेडियो स्टेशन भारतीय संगीत का प्रसारण करते हुए जापान में हिंदी की उपस्थिति को दिखाते हैं जापान में 1921 में 9 विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाती थी जबकि आज इनकी संख्या 26 हो चुकी है जिनमें हिंदी भी शामिल है।

अगर संख्या बल पर ध्यान दें तो पूरे यूरोप की आबादी पैतीस करोड़ है जबकि भारत की जनसंख्या लगभग एक सौ तीस करोड है इसी तरह अगर हमारे यहां 50प्रतिशत आबादी हिंदी पढ़ती लिखती है तो वह पूरे यूरोप से कहीं ज्यादा है अमेरिका में हिंदी फिल्मों में फिल्मी गीतों के माध्यम से पढ़ाई जाती है और प्रवासी भारतवंशी हिंदी की अलख और संस्कृति को जगाए रखे हैं। अमेरिका में हिंदी के विकास में चार संस्थाएं प्रयासरत हैं जिनमें अखिल भारतीय हिंदी समिति हिंदी न्यास अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति प्रमुख है।

अमेरिका की भाषा नीति में दस नई विदेशी भाषाओं को जोड़ा गया है जिनमें हिंदी भी शामिल है । हिंदी शिक्षा के लिए डरबन में हिंदी भवन का निर्माण किया गया और एक कम्युनिटी रेडियो के माध्यम से हिंदी का प्रचार प्रसार किया जा रहा है वह 16 घंटे सीधा प्रसारण हिंदी में देते हैं इसके अलावा हिंदी में के गाने बजाए जाते हैं मॉरीशस में हिंदी का वर्चस्व है तथा उनका संकल्प हिंदी को विश्व भाषा बनाने का है सन 1996 में वहां हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई और उसकी दो पत्रिकाएं बसंत और रिमझिम प्रकाशित हो रही है।

अब तक हुए 11 विश्व हिंदी सम्मेलनों में से तीन मॉरीशस में आयोजित हुए हैं हिंदी के प्रयोग को लेकर इसे छोटा भारत भी कहा जाता है सूरीनाम में भी हिंदी का व्यापक प्रचार–प्रसार है। पूर देश से निकले वाली हिंदी पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (संयुक्त राज्य अमीरात) मॉरीशस हिंदी संस्थान विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी संगठन (मॉरीशस) हिंदी सोसाइटी (सिंगापुर) हिंदी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है उनमें रोजी–रोटी की तलाश में अपना वतन छोड़ गई गिरमिटिया मजदूरों के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता गिरमिटिया मजदूर अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी लेकर गए जो आज हिंदी को वैश्विक स्तर पर फैला रहे हैं मसलन एशिया के अधिकतर देशों की नौसेना का काम कब ओडिया लाओस थाईलैंड मलेशिया जावा आदि में रामलीला के माध्यम से राम के चरित्र पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है। वहां के स्कूली पाठ्यक्रम में रामलीला को शामिल किया गया है हिन्दी की राम कथाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति की संवाहक बन चुकी है।

रेडियो सिलोन और श्रीलंकाई सिनेमाघरों में चल रही हिंदी फिल्मों के माध्यम से हिंदी की उपस्थिति समझी जा सकती है भाषा ह्रदय की अभिव्यक्ति के साथ ही संस्कृति और सभ्यता की वाहक भी है। हिंदी अपनी आंतरिक चुनौतियों से जूझते हुए आज राज्य भाषा ही नहीं बल्कि विश्व भाषा बनने के निकट है। इसमें अन्य भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता है यह हिंदी की सबसे बड़ी पहचान है । हिंदी में अनेक भारतीय भाषाओं में लिखे गए विद्वानों के ग्रंथों का अनुवाद कर इसे जन सामान्य के पठन–पाठन के लिए सरल बनाने का प्रयास किए जा रहे हैं। ज्ञान के सभी अनुशासन अपनी ही भाषा में सम्मिलित किए जा सकते हैं। विश्व में हिंदी की उपस्थिति महत्वपूर्ण है ।संसार में सभी भाषाओं का मूल स्वरूप खतरे में है और वे अपने लिपि संबंधी अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं ऐसे में इसे स्वस्थ रखने और पालने पोसने के लिए युवाओं को आगे लाना होगा ।

विदेशी साहित्य का हिंदी में अनुवाद और हिंदी साहित्य का विदेशी भाषाओं में अनुवाद आवश्यक है । हिंदी आज सिर्फ साहित्य की भाषा नहीं बल्कि बाजार की भाषा है। उपभोक्तावादी संस्कृति में विज्ञापनों को जन्म दिया हैं जिससे न केवल हिंदी का अनुप्रयोग बढ़ा बल्कि युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी मिले। बहुराष्ट्रीय कंपनियों इस बात से भलीभांति अवगत है कि भारत उनके उत्पाद का बड़ा बाजार है और यहां के अधिकतर उपभोक्ताओं हिंदीभाषी हैं। इसलिए उन्होंने अपना उत्पाद बेचने के लिए उसका प्रचार प्रसार हिंदी में करना पड़ेगा। बाजार की भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकृति भले ही मिल गए रही है लेकिन यह बात ध्यान देने

योग्य है कि बाजार हमेशा लाभ पर केंद्रित होता है और लाभ केंद्रित व्यवस्था दीर्घजीव नहीं होती। एक समय के बाद उसका पतन निश्चित है इसलिए हमें हिंदी को ज्ञान और संचार की भाषा के रूप में विकसित करना होगा। किसी देश में विकास के लिए आवश्यक है कि वहां ज्ञान विज्ञान की भाषा जनमानस द्वारा ग्राह्य हो और वह उसे आसानी से समझ सके। इसलिए हिंदी के उपभोक्तावादी रूप के विकास की चुनौतियों को समझना होगा और इसे ज्ञान की भाषा के रूप में विकसित करना होगा तभी इसका भविष्य सुरक्षित हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य– डॉ करुणाशंकर
2. हिंदी साहित्य और सामासिक संस्कृति –डॉ कर्ण राजशेखर
3. भारतीय व्यक्तित्व के संश्लेष की भाषा –डॉ रघुवंश
4. हिंदी साहित्य में संस्कृति के तत्व– डॉ. शिवनंदन प्रसाद
5. हिंदी का विकासशील स्वरूप– डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित
6. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में देवनागरी– श्री जीवन नायक
7. हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य–श्री बच्चन प्रसाद सिंह
8. हिंदी की संवैधानिक स्थिति और उसका विकासशील स्वरूप– प्रो. विजेन्द्र स्नातक

❖◆❖